मोरंगे

मई–जून 2025

अनुक्रम

गीत कविताएँ

बारिश का इंतजार
मेरा गाँव
हैप्पी गर्मी
चार तोते
आलू–कालू

कहानियाँ

मीठा पानी
रानी अम्मा
भालू का बदला
मेरी बकरियाँ

याद की धूप छाँव में

शिक्षक दिवस का तोहफा
नींद में भालू
भालू ओर रामफूल चाचा

बात लै चीत लै
नैना–मैना

तरन्नुम बानो, कक्षा.4, फैलोशिप सेंटर कानसीर

सम्पादन : राजेश कुमावत
डिज़ाइन : लोकेश राठौर
वितरण : अंकुश शर्मा
आवरण चित्र : वंदना मीना, कक्षा–9, उमंग सेंटर–श्यामपुरा।
वर्ष 16 अंक 179–180

प्रबंधन
विष्णु गोपाल
निदेशक
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
एच–1, फर्स्ट फ्लोर, राजनगर कॉलोनी,
मानटाऊन, सवाई माधोपुर, राजस्थान
322001

'मोरंगे' का प्रकाशन 'यात्रा फाउण्डेशन' आस्ट्रेलिया, के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

गीत कविताएँ

बारिश का इंतजार

सावन का महिना बारिश का इंतजार
तरस रही थी आँखें देखने को तीज का त्यौहार
सावन के झूले और बारिश की फुहार
मेरे भी खेत में धरी रह गइ कुदाल
बेसब्री से था अब बारिश का इंतजार
हर घर में घेवर और सूख रही थी दाल
सावन उतरा भादो आया लगा दिया बरखा ने जोर
देख–देख कर आँखें तरसे डूब गई घनघोर
पर किसी का चले ना इस पर जोर
हवा लहर भी चली गई मन फिर से हुआ अधीर
आंधी अंधियारी रात में फिर हुआ अचानक शोर
बादल कड़के, बिजली चमकी, छा गई घटा घनघोर
मोर पपीहा कोयल सब जग गए चहूँ ओर
शीत लहर सी चल पड़ी बारिश हुई घनघोर
ताल तलैया सब भर गए अब रही न कोई ठोर
खिल गए चेहरे सबके मन में हुआ विभोर।

जगदीश कोली, शिक्षक, उमंग सेंटर मखौली

धनराज नायक, नवरंग शिक्षण केन्द्र भदलाव

मेरा गाँव

चलो चले हम चलते हैं
गाँव की सैर करते हैं
गाँव में है एक बड़ी नदी
नहाते उसमें सब कभी कभी
चौराहे पर पीपल का पेड़
बैठे बच्चे बूढ़े ओर अधेड़
गाँव में है पाठशाला
बारिश में बन जाती नाला
आधी आबादी दसवीं फेल
चलते हैं सब अपनी गेल

अजय बैरवा, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

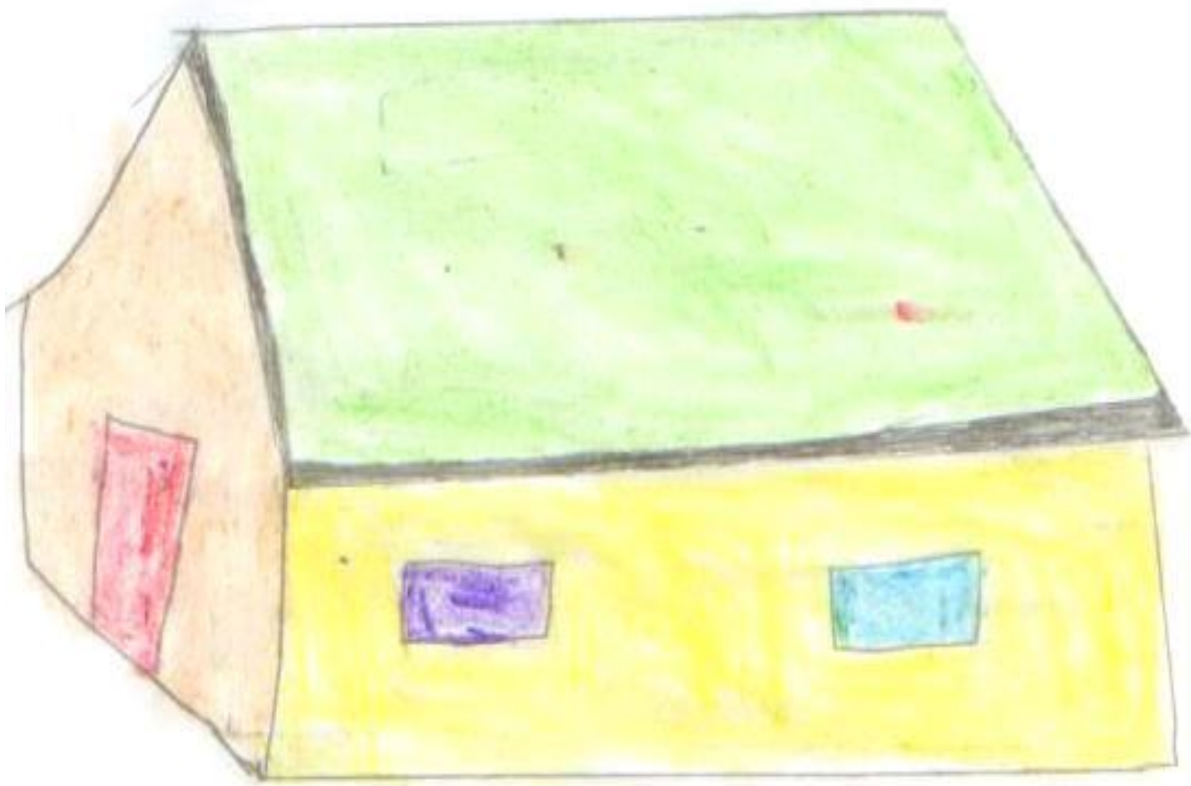

विकास मीना, उम्र–12 वर्ष, फैलोशिप सेंटर छारोदा

हैप्पी गर्मी

कम्बल रजाई को कर दो साफ

कर लो कूलर पंखा साफ

अब मच्छर काटेगा दिन–रात

नहाने से ही बनेगी बात

बिजली जायेगी हर रात

गाँव में है ये आम बात

शरीर में रखो नरमी

मेरी तरफ से हैप्पी गर्मी।

शीतल बैरवा, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

चार तोते

मोटे–मोटे चार तोते

पानी में खाते गोते

उड़कर आते धूल में नहाते

फिर जाते, पानी में डूबकी लगाते

फर फर करके उड़ जाते।

आलू कालू

आसमान से गिरा आलू

भालू का नाम कालू

भालू को मिला आलू

आलू फेंका लेट कर

शहद टपका पेट पर

आलू फूटा गेट पर

कालू रोया मेट पर

अजय बैरवा, कक्षा–7, उदय समुदायिक पाठशाला कटार

वर्षा, कक्षा–3, गाँव–शेरपुर

कहानियाँ

मीठा पानी

एक बार दो चूहे थे। उन्हें प्यास लगी थी। वो पानी की तलाश में जंगल–जंगल जा रहे थे। उन्हें एक हाथी मिला और तालाब के बारे में पूछा। हाथी बोला की तालाब पास में है, मैं भी वहीं पर पानी पीने जा रहा हूँ। तुम दोनों भी मेरे साथ–साथ चलो। चलते–चलते हाथी ने पूछा तुम्हारा नाम क्या है? एक चूहा बोला कि मेरा नाम नमन है और इसका नाम अजय है। हाथी के साथ चलते–चलते दोनों को डर भी लग रहा था। नमन ने बाला कि हाथी भाई जरा देखकर चलना कहीं हम दोनों की टनी नहीं बन जाए। हाथी बोला कि अगर आप मेरे पैरों के नीचे आ गए तो तुम्हारी चटनी ही बन जाएगी इसलिए थोड़ी दूरी बनाकर व सावधानी से मेरे साथ चलो। कुछ ही देर में तीनों तालाब पर पहुँच जाते है। और पानी पीते हैं। नमन बोला कि यह पानी तो खारा है। अजय बोला, हाथी भाई यहाँ आस–पास कोई मीठा पानी हो तो बताओ? हमसे तो खारा पानी पिया ही नहीं जा रहा है और प्यास भी जोर से लग रही है। हाथी बोला कि यहाँ मीठा पानी नहीं है। हम सब खारा पानी ही पीते हैं। आपको भी खारा पानी ही पीना पड़ेगा। यह कहकर हाथी अपने रास्ते चला जाता है। दोनों चूहे मीठा पानी ही पीना चाहते थे पर यहाँ तो पानी खारा था। दोनों चूहों ने अपना दिमाग लगाया और नमन बोला कि क्यों ना हम पानी छान लेते हैं। अजय ने एक कपड़े की मदद से पानी को छानकर पिया। पानी फिर भी खारा ही लगा। फिर नमन ने कहा कि क्यों ना हम तालाब की दीवार ो थोड़ा बहुत खोदते है। जिससे पानी मिट्टी से रिसकर आएगा उसे पीकर देखेंगे। उन्होंने ऐसा ही किया। थोड़ी ही देर में तालाब की प्याल को खोद दिया गय और देख कि पानी थोड़ा–थोड़ा रिसकर आ रहा था। नमन ने पानी पीने के लिए कहा। अजय बोला कि अभी थोड़ी देर और रूको अभी गंदा पानी आ रहा है। थोड़ी ही देर में यह साफ हो जायेगा। घंटे–डेढ़ घंटे बाद उन दोनों ने छानकर पानी पिया। नमन बोला कि यार पहले वाले पानी से तो कम खारा है। फिर वे दोनों वापस जंगल में निकल जाते हैं।

नमन माली, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

रानी अम्मा

एक बार एक गाँव में एक बूढ़ी अम्मा रहती थी। उसकी एक पोती रानी थी। उसके साथ ही रहती थी। रानी के माता–पिता पिछले साल प्राकृति आपदा के कारण इस दुनिया में नहीं रहे थे। अब दोनों बूढ़ी अम्मा और पोती के सामने अपना जीवनयापन करने का संकट आ गया था। उनके पास अनाज का एक दाना भी नहीं था। उन्हे अपने खाने के भी लाले पड़ गए थे तो उन्होंने जंगल से फल तोड़कर बाजार में बेचना शुरू कर दिया। उनके पास केवल एक मटकी थी। दिन में उसी में जंगल से फल भरकर लाते और बेचते और शाम को उसी में पानी भर लेते। इस प्रकार दोनों का थोड़ा बहुत गुजारा होने लगा। लेकिन उनके सामने एक समस्या आई कि वे जंगल से जितने भी फल तोड़कर लाते उनमें से आधे तो खराब हो जाते। इस बात से रानी बहुत दुःखी थी। रानी ने जंगल में जाकर अम्मा की मदद से एक बड़ी सी खुली–खुली टोकरी बना ली। अब वो दोनों जंगल से उसी टोकरी में फल तोड़कर बेचने लगे। अब उनके सारे फल भी सुरक्षित रहने लगे। समय गुजरता गया और रानी ने जंगल से बहुत सारी टोकरियाँ बना ली और उतने ही नौकर लगा लिए। अब वे सभी जंगल से फल तोड़कर गाँव –गाँव फल बेचते और रानी मालिक बनकर अपनी अम्म के साथ खुशी से रहने लगी।

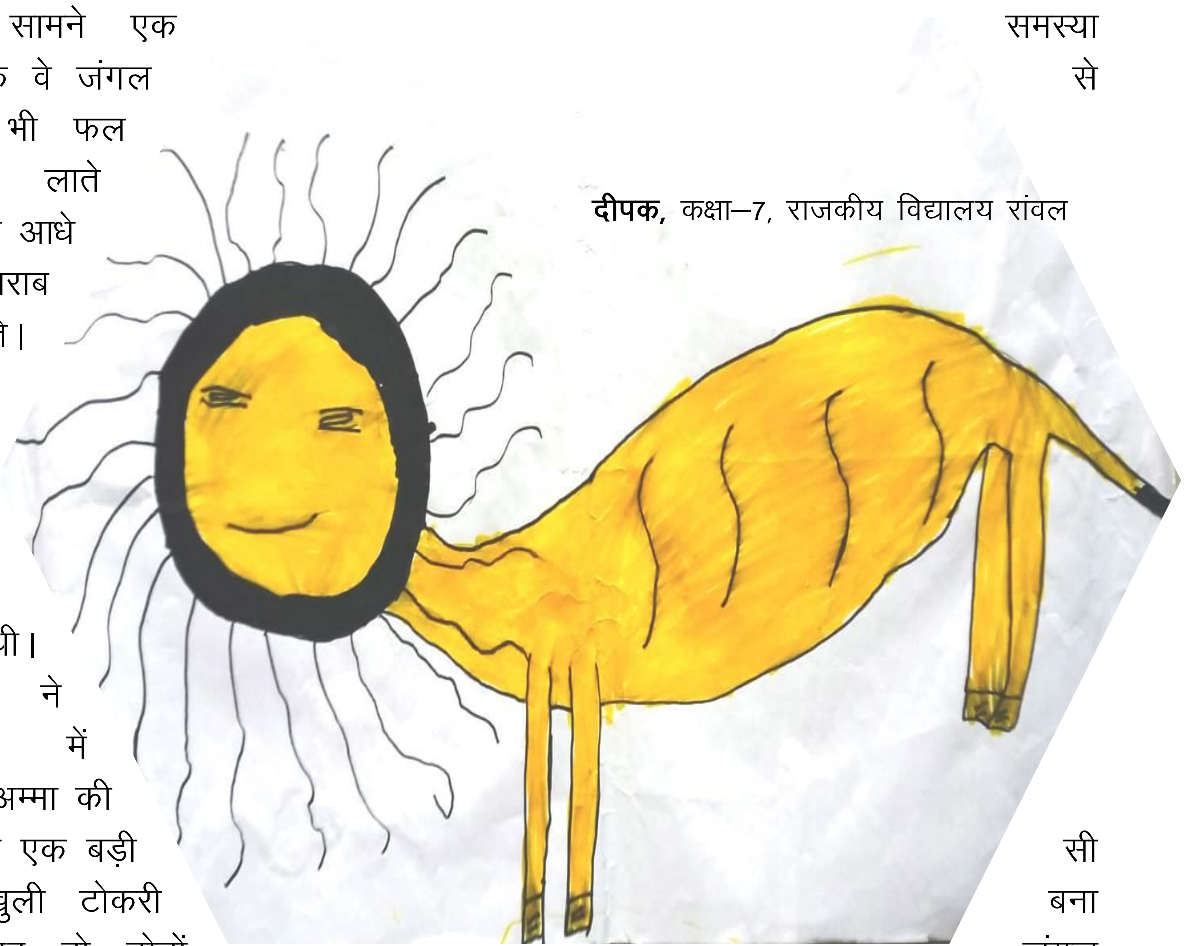

दीपक, कक्षा–7, राजकीय विद्यालय रांवल

मीनाक्षी बैरवा, फैलो, फैलोशिप सेंटर–खण्डेवला।

भालू का बदला

एक बार की बात है। रणथम्भौर के जंगल में सभी जानवर गर्मियों में पानी के लिए बहुत ही परेशान थे। उन्हें कई बार जंगल से बाहर आस–पास के गाँवों में पानी पीने के लिए जाना पड़ता था। इसके लिए उन्हें अपनी जान तक दांव पर लगानी पड़ती थी। एक बार सभी जानवरों ने एक मीटिंग बुलाई और उसमें तय किया कि क्यों ना हम एक बड़ा सा तालाब बना लें। उन्होंने तीन महीने तक लगातार मेहनत की। सभी जानवर गेती, कुदाल, तसली, कुल्हाड़ी लेकर जी–तोड़ मेहनत कर रहे थे। भालू के पास ट्रेक्टर था। उसने ट्रेक्टर से तालाब की प्याल बांध दी और तालाब तैयार भी हो गया। बघेरे ने काम करने वाले जानवरों को परेशान किया और कुछ काम भी नहीं किया । कोई भी जानवर कुछ कहता तो उसे खाने की धमकी भी देता था। दूसरा शेर ने भी बिल्कु काम नहीं किया ओर हमेशा ऑर्डर चलाता रहता था। एक दिन भालू ने बघेरे से थोड़ा सा काम करने के लिए कह दिया तो उसकी पीठ में नाखून चुभा दिये थे। यह बात भालू ने शेर से कह तो उसने भी कुछ नहीं किया और भालू पर हँसने लगा यह बात भालू को हजम नहीं हुई और उसने सब सिखाने की सोची। एक दिन सुबह भालू जब शहद खा रहा था तो उसे एक आइडिया आया। भालू ने एक मधुमक्खी का छत्ता एक ट्टे में भर लिया। शेर के पास चला गया। शेर उस तालाब के किनारे आराम फरमा रहा था। भालू ने शेर से कहा कि आपके लिए बघेरे में बड़ा ही स्वादिष्ट मास के टुकड़े भेजे हैं। आप इन्हें खा लिजिएगा। भालू थोड़ी दूर जाकर चुपके से देखता रहता है। जैसे ही शेर ने मांस खाने के लिए कट्टा खोला तो हजारों मधुमक्खियाँ शेर के पूरे शरीर पर चिपक गई। इससे शेर को काफी तकलीफ हुई और बघरे पर बहुत गुस्सा भी आया। शेर तुरत बघेरे के पास पहुँच गया और उस पर बिना सोचे समझे टूट पड़ा। बघेरे ने तुरन्त वहाँ से भाग जाने में अपनी भलाई समझी। सभी जानवर मानसरोवर तालाब का पानी पीते और मजा उड़ाने लगे।

मेरी बकरियाँ

एक बार की बात है। एक गाँव में एक गरीब आदमी रहता था। उसके पास आठ–दस बकरियाँ थी। वह रोज बकरी चराने जंगल में जाता था। उसके पास बकरियों के अलावाा आजीविका का कोई स्त्रोत नहीं था। ए दिन वह बकरी चराने दूर जंगल में चला गया। वहाँ पर बहुत सारे पेड़–पौधे व हरी–हरी घास थी। बकरियों का पेट हरी–हरी घास खाकर जल्द ही भर गया और वह आदमी अपनी बकरियों को लेकर अपने घर आ गया। बकरियो ने पहले से ज्यादा दूध दिया। अब वह आदमी रोज उसी जगह पर बकरियों को चराने ले जाता। बकरी खूब ताजा और तंदरूस्त लगने लगी। एक दिन बकरियाँ जंगल में चर रही थी की अचानक एक भेड़िया आ गया और चार–पाचं बकरियों को मार कर खा गया। यह देखकर वह आदमी बहुत दुखी हुआ और रोने लगा। जब शाम को बकरियो को लेकर घर आया तब उसका मुँह उदास और रोने जैसा था। उसे देखकर उसकी पत्नी बोली आज आप परेशान लग रहे हो? तब उसने अपनी जंगल की आप बीती बात बताई। पत्नी को भी बहुत दुख हुआ परन्तु वह अपने पति को दुखी नहीं देख सकती थी। पत्नी ने कहा कि आपको घबराने की कोई जरूरत नहीं है। हम मिलकर कोई ना कोई रास्ता निकाल लेंगे। यदि हम बकरियों को अच्छा खाना खिलायेंगे तो हमारी बकरी पहले एक बच्चा देती थी हो सकता है इस बार हमारी बकरियाँ तीन–तीन बच्चे दें और उन्होंने जो सोचा वही हुआ। बकरियाँ ने इस बार तीन–तीन बच्चो को जन्म दिया। यह देखकर वह आदमी बहुत खुश हुआ और बोला अब तो मौज हो गई।

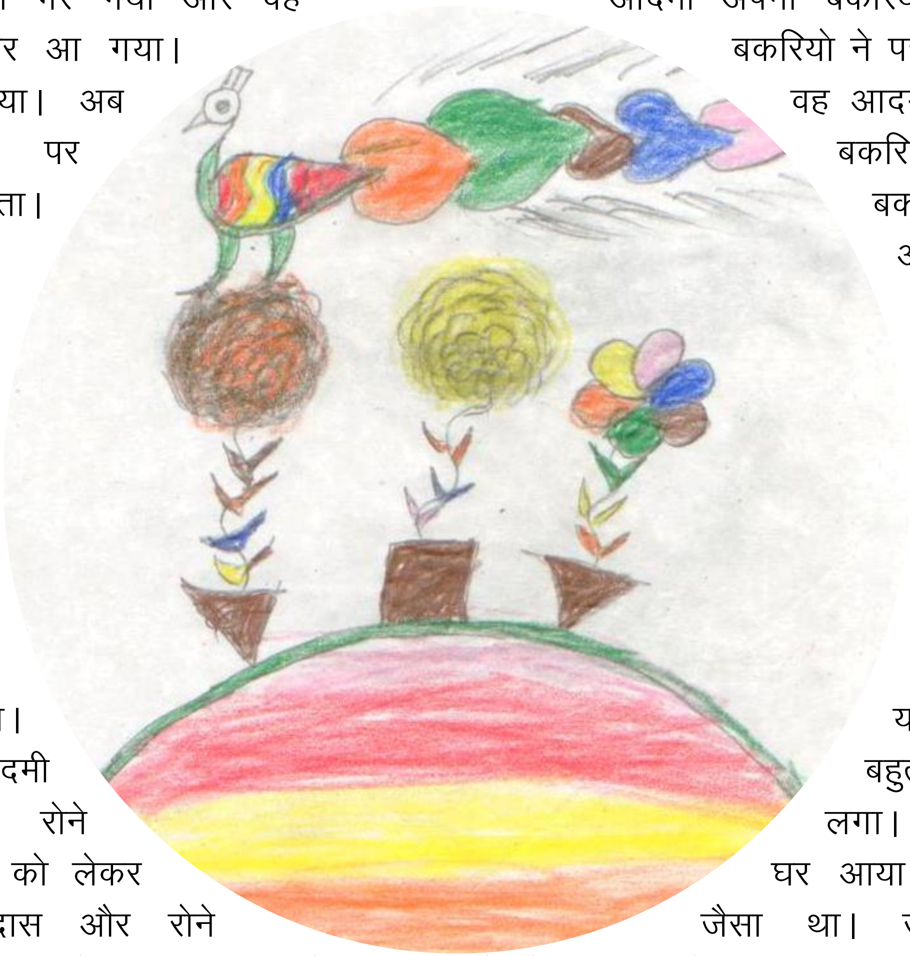

मुरारी लाल प्रजापत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

चित्र– आरती नायक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

याद की धूप छाँव में

शिक्षक दिवस का तोहफा

शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकानाओं के साथ।

मैं आज का अनुभव आ सभी के साथ शेयर करना चाहता हूँ। अनुभव ऐसा कि जब भी जेहन में आता है तो हंसी लबों पर रूक नहीं पाती। बच्चे बड़े भोले, मासूम और निश्चल स्वभाव के होते हैं। कोई मन में पाप नही। उनके मुँह से हर शब्द निराला लगता है। ऐसा ही मेरा अनुभव आज का रहा।

मैं सुबह के समय किसी काम से दुकान पर जा रहा था। मैं जब से उठा ाि तब से शिक्षक दिवस के बारे में सोच रहा था। मेरे गुरूजन जिनके सहयोग से मैं जीवन में आगे बड़ा। सभी मेरे मन मस्तिष्क मे छा रहे थे। मैं सोच रहा था कि बच्चों को शिक्षक दिवस के बारे में कुछ बताऊंगा। उनको शिक्षक के महत्व के बारे में बतांऊंगा, वगैरह–वगैरह। तभी कुछ बच्चे मुझे मिले और उन्होंने नमस्कार किया साथ ही शिक्षक दिवस की शुभकामना दी। मन गद–गद हो गया। एक शिक्षक को और क्या चाहिए, केवल सम्मान।

मैं खुश हो रहा था कि बच्चों ने अभिवादन किया और याद रखा कि आज शिक्षक दिवस है। मैं मन में मगन होता हुआ जा रहा था कि मुझे एक बच्ची दिखाई दी। जिसके हाथ में डंडा था। उसके मम्मी–पापा और दादी भी वहीं थे। वो शायद कुत्तों को भगाकर आ रही थी। मैं खुश हुआ कि ये बच्ची भी मेरा अभिवादन करेगी। अपने मम्मी पापा के सामने। उनके सामने अभिवादन मेरे लिए बड़े गर्व की बात थी। पर ये क्या हुआ मेरा मन जो खुशी की उड़ान भर रहा था। अगले ही पल धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा।

हुआ ऐसा कि जब मैं पास आया तो बच्ची ने अपनी मम्मी से जोर की आवाज में कहा मेरी तरफ इशारा करते हुए मम्मी कुत्ता आ गया। ये बात भी उसने राजस्थानी लहजे में कही। मम्मी गंडखड़ो आ गयो। मैं सन्न रह गया। मैं निःशब्द हो गया। मैं थोड़ा रूका। उसकी मम्मी ने उसे डांटा। बच्ची ने कहा गलती हो गई। मैं कुछ और कहना चाह रही थी पर मैं कुत्तो को भगा रही थी तो मुँह से कुत्ता ही निकल गया। वह बहुत शर्मायी। वह सातवीं कक्षा की छात्रा है। मैं उसकी तरफ हंसा। हंसने की कोशिश की। मैं दुकान पर गया। पर रास्ते में इसी के बारे में सोच रहा था। हंसी भी आ रही थी। सोचा सभी से इस बात को शेयर करूंगा। मैं वापस आया तो वह बच्ची अपनी दादी के पास बैठी हुई थी। उनके बीच बहस चल रही थी। उसकी दादी उसे डांट रही थी। बची जोर–जोर से कह रही थी जीजी मैंने जानबूझकर नहीं कहा। जब वो ऐसा कह रही थी तो मैं उसके सामने से निकल रहा था। तभी बच्चे ने जोर से कहा, जीजी नमस्ते गलती हो गई। मैंने अचानक उसकी तरफ देखा कि उसकी जीजी तो उसके पास बैठी है। वह इतने जोर से किससे कह रही है। उसकी नजर मेरी तरफ थी। उसका एक हाथ कान पकड़े हुए था। तो दूसरे से मुँह

बंद था। मैं समझ गया कि ये मेरे से ही जीजी कह रही है। मेरी हंसी नहीं रूक रही थी। सोच रहा था इसने आज मुझे टारगेट बना लिया है। सोचा इसने फिर गलती कर दी है। ये कहना कुछ और चाह रही थी पर निकल कुछ और गया।

मैंने सोचा आज ा शिक्ष दिवस का यही मेरा तोहफा है। ऐसा मेरा शिक्षक दिवस का अनुभव रहा।

बाद में जिसको भी मैंने यह बात सुनाई वह हंसे बिना नहीं रह सका। वह बच्ची सारे दिन मेरे पास भी नही आई। कभी–कभी ऐसा सभी के साथ होता है। सोचते कुछ और हैं निकल कुछ और जाता है।

रामभजन योगी, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

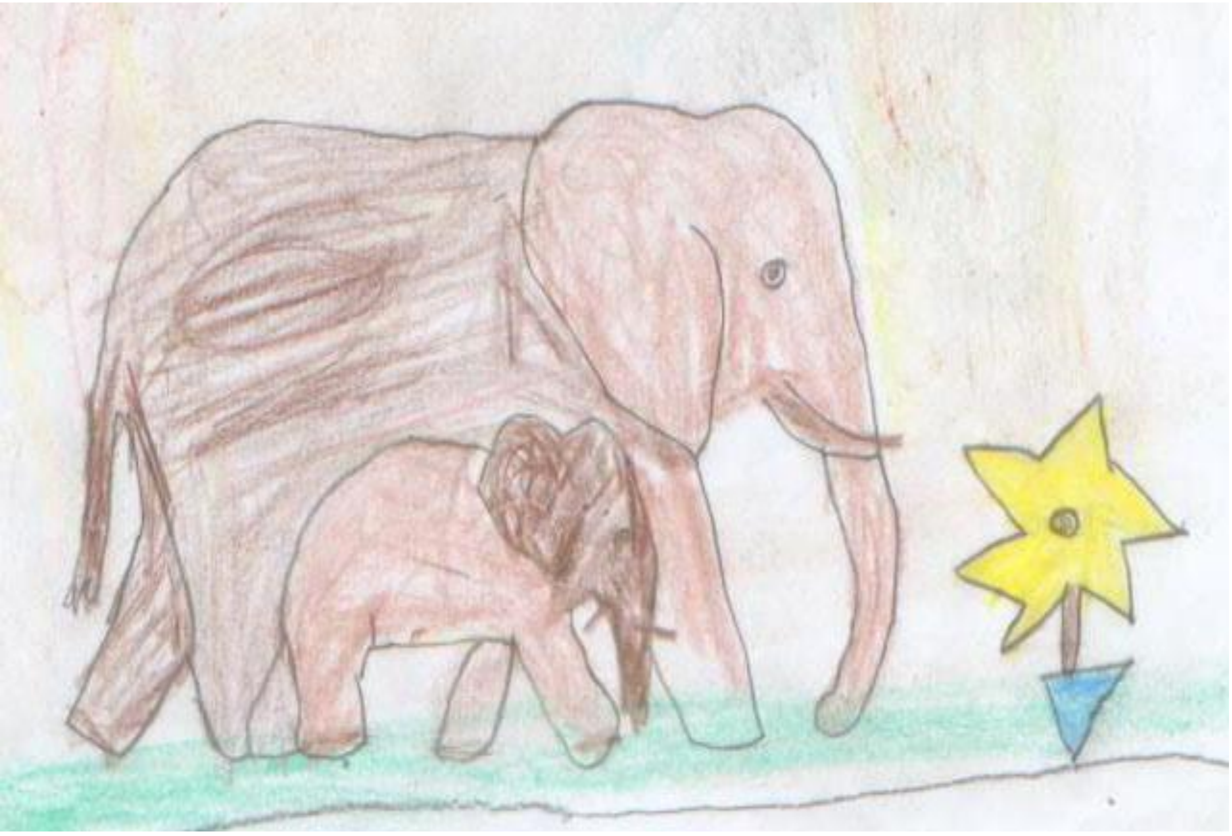

दीपेन्द्र मीना, कक्षा–3, उदय किरण फैलोशिप सेंटर हिरामन की ढाणी

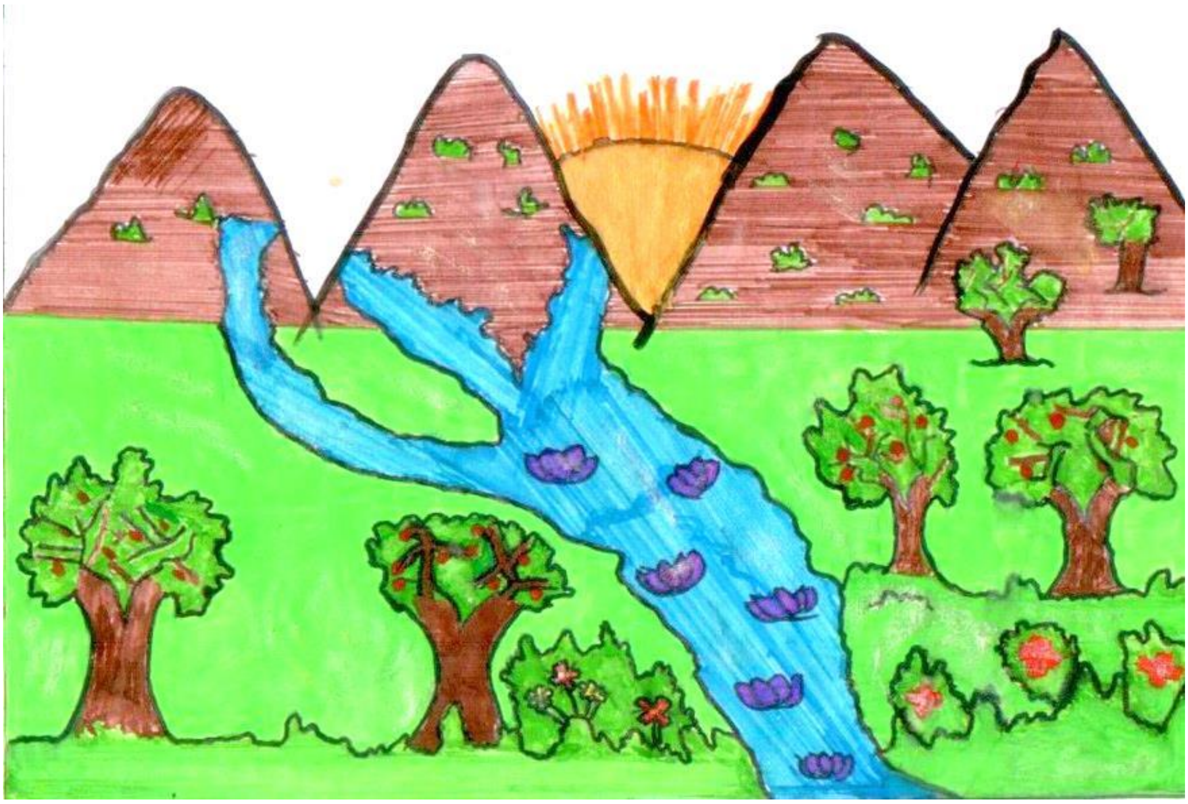

अंजली प्रजापत, कक्षा–8, राजकीय विद्यालय मेईकलां

नींद में भालू

गाँव से थोड़ा सा दूर खेतों में हमारा एक छोटा सा घर है। कुछ दिन पहले हम सभी सो रहे थे। लगभग आधी रात का समय हो रहा था। हम सभी गहरी नींद में थे। अचानक मुझे किसी जानवर की आवाज सुनाई दी। मैंने डरते हुए मेरे पिताजी से कहा कि ये आवाज कैसी है और कहाँ से आ रही है। पिताजी हड़बड़ाकर उठे, मेरी तरफ देखा और बोले चुपचाप सो जा, जब देखे तब नींद मे बड़बड़ाती रहती है। फिर मैं करवट बदलकर सो गई। उसके बाद मेरे पिताजी ने घर के बार देखा तो वहाँ आम के पेड़ के नीचे भालू घूम रहा था। पिताजी ने वहाँ से भालू को भगा दिया। सुबह जब पिताजी ने देखा तो आम के पेड़ पर मधुमक्खी कका छत्ता नहीं था। शायद रात में भालू दोबारा आकर मधुमक्खी का छत्ता तोड़कर उसमें से शहद खा गया होगा। जब मेरी सुबह नींद खुली तो पिताजी बोले कि तू सही कर रही थी। हमारे घर रात को भालू शहद खाने के लिए आया था।

बरसाना गुर्जर, कक्षा–5, फैलोशिप सेंटर–बाढ़पुर।

भालू और रामफूल चाचा (अनुभव)

मल्लापुर गाँव घने जंगल में बसा हुआ है। प्राकृतिक रूप से काफी समृद्ध है। रणथम्भौर अभ्यारण्य से सटा हुआ है। एक रात की बात है। गाँव में एक मंदिर भी है। मंदिर के पास ही एक मकान था, रामफूल चाचा का। रामफूल चाचा रात के समय एक बार तो बाहर निकलते थे। अचानक चाचा को मंदिर में सामान गिरने की आवाज आई। चाचा ने सोचा कि कोई चोर मंदिर के अंदर घुस गया है। चाचा थे तो बूढ़े पर थे बहुत बहादूर। उन्होंने किसी को जगाए बगैर मंदिर में हमला करने की सोची वो दबे पांव मंदिर की ओर आगे बढ़े। जैसे–जैसे आगे बढ़ते गए। वैसे–वैसे सोचते जाते कि आज तो चोरों ो नहीं छोडूंगा। पटक–पटक के मारूंगा। दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था। चाचा ने झटके के साथ दरवाजा खोला। दरवाजा खोलते ही चाचा की बत्ती गुल हो गई। आखे फटी की फटी रह गई। चाचा जी बिल्कुल जड़ की तरह खड़े हो गए। चिल्लाने के लिए मुँह भी नहीं खोल पाए। खोलते भी कैसे। सामने कोई इंसान होता तो खोलते। सामने एक बड़ा भयंकर भालू उत्पात मचा रहा था। आपको पता ही है कि भालू को प्रसाद खाना, बत्ती खाना, घी पीना काफी पसंद है। जैसे ही भालू ने चाचा की तरफ देखा। चाचा जी की बहादूरी समाप्त हो गई और उन्होंने भागना शुरू किया। फिर क्या था आगे–आगे चाचा जी और पीछे–पीछे भालू। चाचा जी की पूरे गांव में परेड़ करवा दी। चाचाजी पहने थे धोती। भागते–भागते धोती आ गई पैर के नीचे और चाचा जी गिरे धड़ाम। लेकिन यहाँ एक चमत्कार हुआ। चाचा जी मुँह के बल गिरे थे पर चेहरा बिल्कुल बच गया। पता है कैसे क्योंकि रोड़ में पड़ा था गोबर और चाचा जी का मुँह उसी गोबर में जाकर पड़ा था। जब भालू ने चाचा जी की हालत देखी तो भालू ने सोचा बुरा हुआ बेचारे के साथ। अब दुबारा रात के समय बाहर नहीं निकलेगा। और भालू चहलकदमी करता हुआ जंगल की ओर भाग गया। चाचा जी अपनी धोती समेटकर अपने घर की ओर चल दिये। दूसरे दिन जब ये गाथा सबको सुनाई तो सब लोग खूब हँसे।

निशा गुर्जर, उम्र–14 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

दिलराज मीना, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

भाषा की सहेलियाँ, बूझो यार पहेलियाँ

1 आड़ चाली माड़ चाली, भुमड़ा बकेर चाली।
2 आड़ चाली माड़ चाली लाल मानियो गाड चाली।
3 सुबह–सुबह को आता हूँ, दुनिया भर की खबर लाता हूँ, लोग मेरा इंतजार करते हैं।
4 एक वाहन हूँ पर पेट्रोल नहीं खाता।
5 एक रूपया पास नहीं, फिर भी राजा कहलाता हूँ।

सोनाक्षी बैरवा, कक्षा–3, फैलोशिप सेंटर–हिम्मतपुरा की ढाणी।

अनुष्का मीना, कक्षा–2, फैलोशिप सेंटर खाण्डोज

चुटकले

1 जेलर – कल तुम्हें फांसी होगी। बताओ तुम्हारी अंतिम इच्छा क्या है।

केदी – मैं तरबूज खाना चाहता हूँ।

जेलर – लेकिन अभी तरबूज का मौसम नहीं है।

केदी – कोई बात नहीं मैं इंतजार कर लूंगा।

2 शिक्षक – बेटा बताओ कि बहुवचन किसे कहते हैं?

पप्पू – जब बहु अपने ससुराल वालों को खरी–खोटी सुनाती है तब उसे बहु वचन कहते हैं।

बात लै चीत लै

नैना और मैना

एक नदी के किनारे एक छोटा सा गाँव था। उस गाँव में एक राजू नाम का किसान रहता था। उसके पास बहुत कम जमीन थी। जिससे राजू के परिवार का घर खर्च सही से नहीं चल पाता था। इसलिए राजू खेती के साथ–साथ नदी में नाव चलाने का काम भी रता था। वह लोगों को एक किनारे से दूसरे किनारे त ले जाता जिससे उसकी कुछ आमदनी हो जाती थी और घर खर्च में मदद मिलती। एक दिन राजू की पत्नी ने दो जुड़वा बच्चियों को जन्म दिया। माँ और बच्चियाँ दोनों स्वस्थ थी। राजू ने एक का नाम नैना तथा दूसरी का नाम मैना रखा। दोनों लड़कियाँ खेतली–कूदती धीरे–धीरे 3 वर्ष की हो गई। एक दिन राजू की पत्नी नदी में नहाने गई हुई थी कि अचानक नदी में तेज पानी आ गया। वह अपने को सम्भाल पाती की उससे पहले ही नदी के पानी में वह बह गई और अपने को बचाने में असमर्थ रही और राजू के जीवन में मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। कुछ दिनों बाद गाँव के कुछ लोग राजू के पास आये और उससे दूसरी शादी करने के बारे में कहने लगे ताकि वह इन बच्चियों को पाल सके। राजू ने उन्हें मना कर दिया।

वह नहीं चाहता था कि उसकी दोनों लड़कियों को कोई सोतेली माँ पाले क्योंकि असली माँ की जो ममता है शायद वह इन बच्चियों को नहीं दे पायेगी। राजू ने निश्चय किया कि वही अपने हाथों से इन दोनों बच्चियों को पालेगा। राजू अब इन बच्चियों को अपने साथ खेत पर तो कभी नाव में अपने साथ ले जाता। बच्चियों को अपने पिता के साथ बड़ा आनन्द आता। इसी तरह दोनों लगभग 10 वर्ष की हो गई। अब वह दोनों खेती और नाव के कार्य में पिता की मदद करने लगी। इनके कार्य को देखकर गाँव में चर्चा होने लगी। दोनों बच्चियाँ ही अकेली नाव को ले जाती हैं और मन करे तभी नदी के तेज पानी में तेरने लगती हैं। अकेली इन लड़कियों ा इस तरह नदी में तैरना हमारे गाँव के सामाजिक नियमों के विरूद्ध है। हमें इसके लिए राजू से बात करनी चाहिए।

अब सरपंच जी व गाँव के कुछ लोग राजू के घर की तरफ आने लगे। उधर राजू अपनी दोनों लड़कियों को स्कूल में पढ़ाने के लिए मन बनाकर सरपंच के पास जाता है और दोनों की मुलाकात गाँव के चौपाल पर ही हो जाती हे। दोनों एक दूसरे को नमस्कार करते हैं। सरपंच जी कुछ कहते कि उससे पहले ही राजू अपनी बात सरपंच जी के पास

रख देता है। राजू की बात सुनकर सभी लोग चोंक गये, क्या!तुम अपनी दोनों लड़कियें को स्कूल भेजना चाहते हो। पता है तुम क्या कह रहे हो। अभी तक किसी ने यह सोचने तक की हिम्मत नहीं की ओर तुम दोनों लड़कियों को स्कूल भेजने की बात कह रहे हो। यहाँ तक हमारे सामाजिक नियमों के अनुसार दोनों लड़कियों का नदी में तैरना भी गलत है। दोबारा इस तरह सोचने की हिम्मत मत करना। राजू ने बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा सरपंच जी पड़ोस के गांव में भी अब लड़कियाँ पढ़ने के लिए स्कूल जाने लगी हैं। अब यहाँ भी लड़कियाँ स्कूल जाये तो इसमें गलत क्या है। राजू ने हर तरीके से समझाने का प्रयास किया पर सफल नहीं हो सका।

नरेन्द्र नायक, कक्षा–4, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

अंत में उसने निश्चय किया कि वह अपनी दोनों लड़कियों को इस गाँव में नहीं तो दूसरे गाँव में ही सही पर स्कूल जरूर भेजेगा। बड़े निराश मन से राजू घर आ गया और सारी

बातें अपनी बेटियों के साथ शेयर की। बेटियों ने पिता के आत्मविश्वास व दूसरे गाँव में पढ़ने जाने की बात सुनकर बहुत खुश हुई। अब अगले दिन नाव में बैठकर वे दूसरे गांव में पढ़ने जाने के लिए पूरी तैयार कर ली गई। रोजाना की भांति आज भी दोनों बहने नदी में नहाने गई हुई थी। तभी उन्हें अचानक जोर–जोर से चिल्लाने की आवाज सुनाई दी। बचाओ कोई है हमें बचाओ। उन्होंने नदी के मध्य में देखा कि एक नाव डूबती नजर आ रही है जिसमें 5–6 व्यक्ति बैठे हुए हैं। दोनों ने बिना देर किये तुरंत नाव की ओर चल पड़ी। नदी में पानी गहरा था परन्तु उन्हें तैरना बहुत अच्छे से आता था। नाव के पास जाकर देखा तो उसमें सरपंच जी का पूरा परिवार था जो कहीं जा रहा था। दोनों बहनों ने नाव की स्थिति को भांपते हुए बड़ी मेहनत करके नाव को परिवार सहित नदी के किनारे पर ले आई। किनारे पर गाँव के कई लोग खड़े थे जो यह सब देख रहे थे। अब सभी दोनों बहनों की ओर देखने लगे। नैना और मैना की वीरता को देखकर सरपंच जी की आँखों में आंसू आ गये। अगर आज यह दोनों बहने नहीं होती तो मेरा पूरा परिवार डूंब चुका होता। सरपंच जी ने निश्चय किया कि गाव की सभी बालिकायें स्कूल में पढ़ने जायेगी। आज आप दोनों बहनों ने मेरी आँखे खोल दी।

टीना सैन, समुदाय बालिका, ग्राम समुदाय–फरिया।

पहेलियों के जवाब

1 बकरी
2 आग
3 अखबार
4 साईकिल
5 शेर

मुस्कान,, उम्र–9 वर्ष, बावरी बस्ती